

9/4/25

पञ्जावली जय-इश्री वाडी क  
रुने अक्षिवमना अक्षुपाक्षित



कोई उपास्थित नहीं आया।  
बार-बार आवक रिक्वाइस्ट  
गरी। वही न आछियमरा  
दोनों अनुपास्थित रहे। अर्थात्  
काउ वारी अलग एकरी,  
अलग फुली स्वयंसेवा मिया  
जाना है पत्रावली मन्त्र  
है कम लोक दाली  
एकर है।

